IMPACT STORIES FORMAT

Story Title	दक्षा के जीवन में संघर्ष से आएं बदलाव के बारे में है
Date	01/10/2024
Prepared by	नन्दलाल मीणा
Name of partner Organization	गायत्री सेवा संस्थान उदयपुर
Name of Daksha/Daksh	लाली निनामा
Name of SKB centre	भोई फला
Cluster	पीपलखूंट
Block	पीपलखूंट
District	प्रतापगढ़

BACKGROUND/CONTEXT:

दक्षा लाली निनामा, उम्र 25 वर्ष, सोबनिया गांव, तहसील पीपलखूंट, जिला प्रतापगढ़ की निवासी हैं। उनके परिवार की आर्थिक स्थिति शुरू से ही कमजोर रही है। माता-पिता खेती-बाड़ी औरमजदूरी करके परिवार का भरणपोषण करते थे। लाली की पढ़ाई सरकारी - विद्यालय में हुई, लेकिन जब वह तीसरी कक्षा में थीं, तब उनकी माता का निधन हो गया, जिससे परिवार में भारी शोक छा गया। पिता ने मजदूरी करके किसी तरह परिवार की जिम्मेदारियां संभालीं, और बड़ी बहन ने लाली और उनके भाई की देखभाल की। आर्थिक तंगी के चलते लाली की पढ़ाई में कई दिक्कतें आईं, और अब उनके पिता लकवाग्रस्त हैं, जो चल भी नहीं सकते। परिवार का आर्थिक बोझ अब पूरी तरह से लाली के कंधों पर है।

CHALLENGES FACED:

लाली निनामा को बचपन से ही कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जब वह तीसरी कक्षा में थीं, तब उनकी मां का निधन हो गया, जिससे उनके परिवार पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा। पिता ने मेहनत और मजदूरी से घर चलाया, लेकिन आर्थिक संकट के चलते लाली की एक साल की पढ़ाई छूट गई। हालांकि, परिवार के सहयोग से उन्होंने धीरेधीरे पढ़ाई जारी - रखी और दसवीं व बारहवीं कक्षा पास की। बारहवीं में अच्छे अंकों से पास होने पर विद्यालय से उन्हें आर्थिक सहायता भी मिली। लेकिन परिवार की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण भविष्य की चुनौतियां बरकरार रहीं। उनके पिता लकवाग्रस्त हो गए, और अब परिवार में कमाने वाला कोई नहीं है। दक्षा लाली ही अपने परिवार का भरणपोषण करती हैं।-

INTERVENTION/ACTIVITIES:

दक्षा लाली निनामा रोजाना 1 किलोमीटर पैदल चलकर सखियों की बाड़ी केंद्र पर पहुंचती हैं। उनके केंद्र के आसपास जंगल का फैलाव है, फिर भी वह नियमित रूप से बच्चों को पढ़ाने जाती हैं। गांव के लोग दक्षा के काम की सराहना करते हैं, और अभिभावक भी उनका सहयोग करते हैं। लाली बच्चों को खेलखेल में और विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से शिक्षा देती - हैं, जिससे बच्चों को सीखने में मजा आता है। दक्षा पूरे समर्पण और मेहनत से बच्चों को शिक्षण करवाती हैं, और उन्हें यह अवसर पाकर खुशी होती है कि उन्हें बच्चों को पढ़ाने और खुद को भी आगे बढ़ाने का मौका मिला है।

OUTCOMES:

दक्षा लाली निनामा ने अपने संघर्षों को पार करते हुए अपने जीवन में बड़ा बदलाव लाया है। सखियों की बाड़ी से जुड़ने से उन्हें आर्थिक मदद मिली, जिससे वह अपनी पढ़ाई भी प्राइवेट से जारी रख पाईं और बीकी डिग्री हासिल की। आज लाली और उनका परिवार बेहद .एड. खुश है कि उनकी बेटी ने गांव की बकरी चराने वाली बालिकाओं को शिक्षा की मुख्यधारा में जोड़ा और खुद भी पढ़ाई करके अपने जीवन को संवारने में सफल रहीं। उनका यह सफर आत्मनिर्भरता और शिक्षा की शक्ति का उदाहरण है।

GOOD QUALITY IMAGE: - 3-4 IMAGES (Attach below)